Volume-4, Issue-08, August 2017 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में इतिहास और कल्पना (विशेष संदर्भ: पतन, चित्रलेखा, युवराज चूंडा, चाणक्य)

राम चरण मीना
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली- 110021

भगवतीचरण वर्मा जी ने अपने उपन्यास साहित्य में इतिहास और वर्तमान के अंतःसम्बन्ध का वर्णन किया है। उन्होंने अपने उपन्यास लेखन का प्रारम्भ अपने प्रथम उपन्यास 'पतन' (1928 ई. में प्रकाशित) से किया है। इसी कड़ी में उनका दूसरा उपन्यास 'चित्रलेखा' 1934 ई. आता है यह उपन्यास इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इन उपन्यासों में ऐतिहासिकता का आभास था। लेखक ने इतिहास से कुछ पात्रों को लेकर इन उपन्यासों के कथा का आधार बनाया है।

ऐतिहासिक उपन्यासों के निर्माण की प्रमुख प्रेरणा का विश्लेषण करते हुए 'आलोचना' पत्रिका में एक आलोचक ने लिखा है कि ''वर्तमान से पराजित तथा असन्तुष्ट होने के फलस्वरूप पलायन की भावना, अतीत को वर्तमान से अधिक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण समझते हुए उसके पुनस्संस्थापन की भावना, कतिपय ऐतिहासिक घटनाओं या पात्रों के प्रति न्याय की भावना, इतिहास-रस में लिप्त रहने की सहज भावना, जातीय-गौरव, राष्ट्रप्रेम, आदर्श स्थापना तथा वीर पूजा-भावना, जीवन की किसी नवीन व्याख्या को प्रस्तुत करने की भावना"।[i]

वर्मा जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में सर्वहारा वर्ग, नारी-वर्ग, तथा दासी वर्ग आदि की यातना, पीड़ा, शोषण आदि के साथ-साथ राजाओं और सामंतों की कामुक प्रवृत्ति को उजागर करने का प्रयास किया है। इस संबंध में डॉ. ब्रजनारायण सिंह का मानना है कि ''ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेम और वासना सम्बन्धी जो संस्कार उसे परंपरा से प्राप्त हुए थे उन्हें ही उपन्यास के पात्रों द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। इस समय तक लेखक का व्यक्तित्व इतना सबल नहीं बना पाया था कि वह यथार्थवादी दृष्टि अपनाकर सामाजिक भय का पर्दा उघाड़कर वास्तविकता को प्रस्तुत कर सकता। उस समय तक हिन्दी उपन्यासों में ऐसा वातावरण भी नहीं बन पाया था और न युग की सुधारवादी प्रवृत्ति के विरोध में कोई तरूण लेखक इस प्रकार का साहस ही कर सकता था। इसी लिए जहाँ कहीं उपन्यास में लेखक ने विलासी जीवन का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, वहां भी पर्याप्त भयभीत और सचेत है।''[ii]

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों को जानने से पहले हमें ऐतिहासिक उपन्यास क्या होते हैं को जानना आवश्यक है। ऐतिहासिक उपन्यास हम उसे कहते हैं जिसमें किसी काल व देश की कोई भी ऐतिहासिक कथा शामिल हो। उस कथा को उपन्यास की शैली द्वारा चित्रित की जाती है। इन कथाओं को कहने पर ही लेखक का ध्यान रहता है। ऐतिहासिक उपन्यासों की कथा में इतिहास और उपन्यास के तत्वों का मिश्रण होता है। इन कथाओं में कल्पना तथा यथार्थ की प्रधानता विद्यमान रहती है। इन उपन्यासों में देशकाल तथा वातावरण का सबसे अधिक ध्यान रखा जाता है। साथ ही लेखक को अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करने के अलावा तात्कालिक परिस्थितियों का बिम्ब प्रस्तुत करना चाहिए। इन उपन्यासों में किसी देश के काल के विशिष्ट वातावरण का चित्रण किया जाता है।

ऐतिहासिक उपन्यास दो प्रकार के होते हैं। पहला, वे उपन्यास जो विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक हो और दूसरा, वे उपन्यास जिसमें ऐतिहासिकता के साथ रोमांस उत्पन्न करने के लिए कल्पना का सहारा लिया जाता है।

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में मुख्य रूप से 'पतन', 'चित्रलेखा', 'युवराज चूण्डा' तथा 'चाणक्य' का नाम लिया जा सकता है। वर्मा जी ने इन उपन्यासों के माध्यम से ऐतिहासिक वातावरण को प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इन उपन्यासों का आधार तथा पृष्ठभूमि भले ही सत्य न हों लेकिन ऐतिहासिक वातावरण में पाठक को डूबा देने की शक्ति अवश्य रखते हैं।

'पतन' वर्मा जी का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में वर्मा जी ने इतिहास के अत्यन्त आकर्षक तथा प्रसिद्ध व्यक्तित्व अवध के नवाब वाजिदअली शाह की विलासिता और तत्कालीन समाज की पतनोन्मुखी अवस्था को कथा का आधार बनाया है। वर्मा जी ने इस उपन्यास में एक ऐतिहासिक चरित्र को लिया है तथा उससे संबंधित पर्याप्त जानकारी भी दी है। हालांकि यह जानकारी विभिन्न दंतकथाओं पर आधारित थी। इस उपन्यास में अवध के नवाब के जीवन की विलासिता तथा उसका पतन के गर्त में जाते हुए समाज की कहानी कहानी के रूप में दिखाया गया है। इस संबंध में लेखक का

मानना है कि ''वासना नशा है। उसमें उतावलापन रहता है- उसमें संसार का सारा सुख है। वासना सांसारिक है, प्रेम दैवी है, वासना नशा है, प्रेम अमृत है।''[iii]

वर्मा जी ने यहां पर ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए वासना के दुष्परिणामों की तरफ संकेत किया है। वर्मा जी के अनुसार इससे मनुष्य को कभी सन्तुष्टि नहीं हो सकती। इस विचार को दृश्यमान करने के लिए उन्होंने ऐतिहासिक पात्र के रूप में वाजिदअली शाह तथा अलिनकी खाँ को चुना है। लेखक के ऊपर कुछ समीक्षक यह आरोप लगाते हैं कि, ''इस उपन्यास में ऐतिहासिक युगीन वातावरण चित्रित करने के लिए किंवदंतियों का आधार लिया है जो प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव के कारण शिथिल है।''[iv]

वाजिदअली शाह के दरबार में विलासमय जीवन और बेगमों तथा महलों में शोचनीय स्थिति का उपन्यास में वर्मा जी के द्वारा जो चित्रण मिलता है उसका कोई ठोस ऐतिहासिक आधार भी नहीं है। उपन्यास का कथानक 1851 के कानपुर तथा लखनऊ नगर से संबंधित है इसलिए इस उपन्यास के कथानक को ऐतिहासिक कहा जा सकता है।

'चित्रलेखा' वर्मा जी का दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक परिवेश को आधार बनाकर लिखा गया है जिसमें हर्षवर्धन के समय की संस्कृति तथा सभ्यता के चित्र मिलते हैं। जिसके कारण पाठक को ऐतिहासिक वातावरण में डूब जाने की प्रेरणा मिलती है। लेखक ने ऐतिहासिक वातावरण के अन्तर्गत युगीन जीवन और आचार विचार आदि की ऐसी पृष्ठभूमि उपस्थित की है कि यह उपन्यास सम्पूर्ण रूप से ऐतिहासिक ही प्रतीत होता है। इस उपन्यास को सांस्कृतिक उपन्यास भी कह सकते हैं। उपन्यास के आरंभ में ही 'छलकते हुए मदिरा के पात्र को मुख से लगाते हुए बीजगुप्त ने कहा- चित्रलेखा जानती हो जीवन का सुख क्या है? और उत्तर में वर्मा जी ने 'मस्ती' जैसे शब्द का उच्चारण करवाकर इतिहास और संस्कृति का संयोजन कर दिया है।

वातावरण की दृष्टि से 'चित्रलेखा' ऐतिहासिक उपन्यास दिखाई देता है परन्तु ऐसा है नहीं। इस उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण का आभास मात्र प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। उपन्यास को ऐतिहासिक तथ्यों से आच्छादित करना तथा उसके माध्यम से पाठकों को ऐतिहासिक कृति प्रदान करना लेखक का प्रमुख उद्देश्य नहीं है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐतिहासिक वातावरण की चित्रात्मकता और काव्यात्मकता कथानक के सौन्दर्य की अभिवृद्धि करती है। ऐतिहासिकता के लिए घटनाओं का यथार्थ होना आवश्यक होता है। इस उपन्यास में कथानक ऐतिहासिक नहीं है परन्तु इसके कथानक का आधार ऐतिहासिक है।

'चित्रलेखा' उपन्यास ऐतिहासिक परिवेश को आधार बनाकर लिखा गया है। इस संबंध में डॉ. प्रेम कुमार का मत है कि ''इस उपन्यास के परिवेश में ऐतिहासिकता का भ्रम होता है किन्तु यह ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है, इसमें धर्म व दर्शन पर तर्कपूर्ण चर्चा हुई है किन्तु यह दर्शन ग्रन्थ भी नहीं है। चित्रित पात्रों का मनोवैज्ञानिक रूप इसे मनोवैज्ञानिक ग्रन्थ भी नहीं बना सका। व्यक्ति व समाज को लेकर व्यक्त हुई कुलबुलाहट के कारण इसे सामाजिक उपन्यास करार नहीं दिया जा सकता। बीजगुप्त इस उपन्यास के बारे में भोगवादी धारणा नहीं बनवा सकता। योगी कुमारगिरि वैराग्य की धारणा उद्दीप्त नहीं कर सकता परन्तु यह सत्य है कि चित्रलेखा और लेखकीय कलात्मकता मिलकर इस उपन्यास को अनुराग विराग की पाप-पुण्यमयी साहित्य व्याख्या अवश्य सिद्ध कर सकता है।''[v]

ऐतिहासिक उपन्यास में पात्रों का ऐतिहासिक होना आवश्यक है। चित्रलेखा में दो ऐतिहासिक पात्र है- पहला सम्राट चन्द्रगुप्त तथा दूसरा मन्त्री चाणक्य। लेकिन उपन्यास के मूल कथानक से इन पात्रों का कोई खास सम्बन्ध भी नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यास के लिए ऐतिहासिक घटना का होना भी आवश्यक है परन्तु 'चित्रलेखा' उपन्यास में कोई भी ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं मिलता। लेखक ने इस उपन्यास में कुछ ऐतिहासिक वातावरण का विवरण देने का प्रयास किया है। परन्तु उपन्यास में वह उतना सजीव नहीं जान पड़ता। अतः चित्रलेखा को ऐतिहासिक उपन्यास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

'चित्रलेखा' उपन्यास पर फ्रान्स के अनातुले की 'थाया' का प्रभाव भी दिखाई देता है। स्वयं लेखक ने भी इसे 'थाया' से प्रभावित माना है। 'चित्रलेखा' को लेखक ने एक समस्यामूलक उपन्यास माना है। उन्होंने लिखा है ''चित्रलेखा में एक समस्या है, मानव जीवन को तथा उसकी अच्छाईयों को देखने का मेरा अपना दृष्टिकोण है और मेरी आत्मा का अपना संगीत है।''[vi]

वर्मा जी ने 'चित्रलेखा' उपन्यास में श्वेतांक के माध्यम से मदिरा का विरोध तथा संयम का समर्थन कराया है। उपन्यास में 'चित्रलेखा', श्वेतांक को मदिरापान के लिए बाध्य करती है परन्तु वह विरोध करते हुए कहता है कि ''देवि संयम जीवन का एक आवश्यक अंग है और मदिरा और संयम में विरोध है।'' उपन्यास की अन्य पात्र यशोधरा भी जीवन में संयम को ही महत्व देती है।

जीवन का मूल तत्त्व वासना अर्थात् काम-चेष्टा है। सृष्टि की उत्पत्ति इसी से हुई है जगत् में जो कुछ है वह काम चेष्टा का ही परिणाम है। वैसे तो जगत् के मूल में वासना है परन्तु स्वच्छन्दवासना कुमार्ग की ओर प्रेरित करती है। इसलिए वासना पर संयम की पाबन्दी होना आवश्यक है। 'चित्रलेखा' उपन्यास में योगी कुमारगिरि अपने शिष्य विशाल देव को वासना से युद्ध करने का उपदेश देते हुए कहते हैं-''जीवन की उत्कृष्टता वासना से युद्ध करने में है।'' इसलिए लेखक का मानना है कि वासना की पूर्ति के लिए उचित साधन तथा उचित मार्ग को अपनाना चाहिए। अनुचित मार्ग को अपनाने पर वह पाप का भागी बन जाता है। जीवन के उन्नायक तत्त्वों में तप, भोग, यज्ञ, प्रेम, सत्य, न्याय तथा त्याग, संयम, वासना, ममता, करूणा, सहयोग, सहानुभूति, श्रम, सेवा, कर्म, सरल जीवन तथा लोक मंगल की भावना प्रमुख है।

भोग विलास, स्वच्छन्द-वासना, लोभ-मोह, धन-कामना आदि जीवन के बाधक तत्वों के अन्तर्गत माने जाते हैं। कभी-कभी इन अवरोधक तत्वों की वजह से मनुष्य का जीवन भी नष्ट हो जाता है। 'भूले-बिसरे चित्र' उपन्यास का पात्र ज्वालाप्रसाद सर्वगुण सम्पन्न होने के बावजूद जैदेई से अशर्फियां लेने के कारण अपने चरित्र का हनन कर लेता है। वह कहता है ''ममता और न्याय न ये बिकते है। और न खरीदे जाते हैं। यह रुपया, पैसा, जीवन में सब बुराइयों की जड़ यही है, तो भौजी अब फिर कभी, इस प्रलोभन में मुझे डालने की कोशिश न करना।''

भोग-विलास एवं स्वच्छन्द वासना भी जीवन के बाधक तत्व है। 'चित्रलेखा' उपन्यास में योगी कुमारगिरी अपने जीवन में इसलिए सफल नहीं हो पाता। वह स्वयं को प्रत्यक्ष रूप से योगी मानते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से स्वच्छन्द वासना तथा भोग-विलास की इच्छा अपने मन में रखता है। उपन्यास में साधना प्राप्त करने की इच्छा से आई हुई नर्तकी चित्रलेखा उसकी वासना की शिकार बनती है। 'रेखा' उपन्यास में रेखा नामक पात्र भी जीवन में सफल नहीं हो पाती। वह जिस युवक को भी देखती है उससे ही वासना की पूर्ति करना चाहती है। 'अपने खिलौने' उपन्यास का युवराज विरेश्वर प्रताप भी भोग-विलासी ही दिखाई देता है वह उपन्यास में अपने चारों ओर विभिन्न लड़कियों को घेरे रखता है जिसमें मीना, अन्नपूर्णा तथा केश कोमल आदि शामिल है वह सभी से प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु वह किसी को भी अपनी पत्नी नहीं बना पाता।

वर्मा जी ने 'चित्रलेखा' उपन्यास में बीजगुप्त के माध्यम से अपनी दार्शनिक विचारधारा का प्रतिपादन किया है। लेखक के अनुसार बीजगुप्त जीवन का भरपूर आनन्द उठाता है। उपन्यास में वह कहते हैं-''बीजगुप्त भोगी है, उसके हृदय में यौवन की उमंग है और आँखों में मादकता की लाली। उसकी अट्टालिकाओं में भोग विलास नाचा करते हैं, रत्नजटित मदिरा के पात्रों में उसका जीवन का सारा सुख है, वैभव और उल्लास की तरंगों में वह केलि करता है, ऐश्वर्य की उसके पास कमी नहीं है। उसमें सौन्दर्य है और उसके हृदय में संसार की समस्त वासनाओं का निवास है, उसके द्वार पर मातंग झूमा करते हैं, उसके भवन में सौंदर्य के मद से मतवाली नर्तकियों का नृत्य हुआ करता है। ईश्वर पर उसे विश्वास नहीं, शायद उसने कभी ईश्वर के विषय में सोचा तक नहीं है और स्वर्ग तथा नरक की उसे चिन्ता नहीं। आमोद-प्रमोद ही उसके जीवन का साधन है और लक्ष्य भी।''[vii]

बीजगुप्त का हृदय विशाल है वह प्रेम के क्षेत्र के साथ-साथ मानवता के क्षेत्र में भी अपने हृदय के विशाल होने का परिचय देता है वह खुद के लिए व्यक्ति-स्वातंत्र्य नहीं चाहता साथ ही दूसरों के सुख के लिए भी त्याग करता है। उपन्यास में वह श्वेतांक के जीवन को सुखी बनाने के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है। वह उपन्यास में कहता है-''दूसरों के सुख में बाधक होना केवल अपने सुख की आशा पर, कायरता है, नहीं नीचता है। मैं अन्याय कर रहा हूँ, दूसरों के सुख में बाधक होना केवल अपने सुख की आशा पर कायरता है, नहीं नीचता है। मैं अन्याय कर रहा हूँ, दूसरों के साथ और स्वयं अपने साथ भी। हमारे हिस्से में सुख और दुःख दोनों पड़े हैं- हमारा कर्तव्य है कि हम दोनों को ही साहसपूर्ण भोगें।''[viii] इससे यह स्पष्ट होता है कि बीजगुप्त भोगी है परन्तु वह पतित नहीं है। इसीलिए यह कहा जाता है कि आर्य-सम्राट चन्द्रगुप्त भी उनके सम्मान में नतमस्तक है।

वर्मा जी ने जीवन की कटुता, विषाद, क्षणिकता, जीवन-जगत् की अस्थिरता और परिवर्तनशीलता को ही भोगवाद का आधार माना है। उन्होंने अपने उपन्यासों में इन्हीं समस्याओं से मुक्ति दिलाने के लिए भोगवादी दर्शन को अपनाया है। उनके प्रथम उपन्यास 'पतन' से लेकर आखिरी उपन्यास-'चाणक्य' में इसी भोगवादी दर्शन की अभिव्यंजना हुई है। जिसके अन्तर्गत 'पतन' में प्रतापसिंह, भवानीशंकर, सरस्वती, 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रलेखा, बीजगुप्त तथा 'तीन वर्ष' उपन्यास में रमेश-प्रभा, अजित-लीला आदि शामिल है।

'चित्रलेखा' विषयवस्तु तथा प्रतिपाद्य की दृष्टि से वर्मा जी के भोगवादी दर्शन की एक सशक्त कृति है। इस उपन्यास में पाप और पुण्य का भेद काल्पनिक रूप में स्वीकार किया गया है वास्तविक रूप में नहीं। बीजगुप्त और चित्रलेखा के जीवन का इष्ट केवल आमोद-प्रमोद है तथा यही उनके जीवन का साधन और लक्ष्य भी है। चित्रलेखा के जीवन का अभीष्ट 'न बुझने वाली पिपासा' है। कुमारगिरि को देखते ही अपने मन में बीजगुप्त का आकर्षण धूमिल पड़ने लगता है। साथ ही स्वयं को कुमारगिरि के हाथों में भी सौंप देती है।

ऐतिहासिक उपन्यास के अगले क्रम में वर्मा जी का 'युवराज चूण्डा' नामक उपन्यास आता है। इसका प्रकाशन वर्ष 1978 ई. है जो एक लघु ऐतिहासिक उपन्यास की श्रेणी में आता है; परन्तु इसकी कथा पूर्ण रूप से ऐतिहासिक भी नहीं है। इस उपन्यास की ऐतिहासिकता और प्रभाविकता इतिहासकार कर्नल टाड के राजस्थान के इतिहास पर आधारित है। जिसमें लेखक ने उस समय के राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक जीवन तथा उस समय की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया है। वर्मा जी ने इस कहानी की रचना एक फिल्म की कहानी के लिए की थी परन्तु यह एक सफल व ऐतिहासिक उपन्यास बन गया।

इस उपन्यास की रचना चित्तौड़ के राजा लाखा के पुत्र युवराज चूण्डा के व्यक्तित्व पर आधारित है। वर्मा जी ने इसमें मध्यकालीन मनोवृत्ति का उद्घाटन किया है। इस उपन्यास में मेवाड़ और मारवाड़ के दो राजवंशों की कथाओं का वर्णन किया है। इस कृति के संबंध में स्वयं वर्मा जी का मानना है कि ''यह एक भावात्मक आदर्शवाद से युक्त है। शायद ऐतिहासिक उपन्यास का लक्ष्य भी यही होता है कि हम अपने आदर्शवाद को प्रस्तुत करें। मुझे लगा कि मैंने आदर्शवाद की हमेशा उपेक्षा की है। मैं तो यथार्थवादी हूँ तो मैंने कहा एक प्रयोग इसी पर कर लीजिये। हर एक प्रयोग करना चाहिए, यह प्रयोग ही क्यों छोड़ा जाये।''[ix]

'युवराज चूण्डा' उपन्यास में ऐतिहासिकता के साथ ही कल्पना का सम्मिश्रण भी मिलता है लेकिन उपन्यास में वर्मा जी ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि करने में भी सफल रहे हैं। इस उपन्यास में राजनीति की विभिन्न चालों के साथ ही राजस्थान में प्रचलित विभिन्न प्रथाओं, मर्यादाओं आदि का भी चित्रण किया गया है। साथ ही गोलीप्रथा का भी वर्णन मिलता है।

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में उनका अंतिम उपन्यास 'चाणक्य' का नाम आता है जो उनकी मृत्यु के पश्चात् 1982 ई. में प्रकाशित होता है। इस उपन्यास में कल्पना का भी मिश्रण है साथ ही इस उपन्यास के पात्र भी ऐतिहासिक हैं पर इसकी घटनाएं प्रामाणिक नहीं जान पड़ती। प्रस्तुत उपन्यास चाणक्य के जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत करता है। परन्तु वर्मा जी ने कल्पना के द्वारा चाणक्य के चरित्र में नवीनता उत्पन्न करने की भावना से उनका विवाह 'वीथिका' नाम की स्त्री से कराकर 'कामसूत्र' ग्रन्थ की रचना उनके द्वारा बतायी है। इस उपन्यास की कथा का आरंभ मगध नरेश महापद्म नंद के 'दान-पर्व' के आयोजन से होता है। जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य धर्मरक्षित के साथ तक्षशीला के आचार्य विष्णुगुप्त भी मगध पहुँचते हैं।

वर्मा जी के उपन्यासों का स्वरूप अवसर बहुआयामी है। उनके यहां उपन्यास केवल इतिहास और कल्पना के सहारे ही नहीं लिखे गए हैं बल्कि उन्होंने अपने इस कल्पना शक्ति का प्रसार अपने सामाजिक एवं राजनीतिक उपन्यासों में भी किया है । वर्मा जी अपने प्रारंभिक उपन्यास 'पतन' तथा 'चित्रलेखा' से ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा से जुड़ते हैं जबकि बाद के उपन्यासों में वे सामाजिक समस्याओं तथा उसके दुष्परिणामों के वर्णन के साथ ही राजनीतिक यथार्थ को अपनाते हैं। जिसमें उनके 'भूले बिसरे चित्र', 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' तथा 'सीधी सच्ची बातें' उपन्यास शामिल है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में सामन्तवाद, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, गाँधीवाद तथा समाजवाद आदि सभी युगीन विचारधाराओं को चित्रित किया है। उनके औपन्यासिक साहित्य में देश की तत्कालीन सामयिक राजनीति में राजनेताओं की स्वार्थपरता, सत्ता-लोलुपता, भाई-भतीजावाद तथा पूँजीपतियों का राजनीति में वर्चस्व आदि का यथार्थ वर्णन मिलता है। उनके 'सामर्थ्य और सीमा', 'सबहिं-नचावत राम गोसाई', प्रश्न और मरीचिका आदि उपन्यासों में स्वतंत्रता के बाद की परिवर्तित राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन मिलता है।

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र की राजनीति वह नहीं रही जिसका संकल्प लेकर लोगों ने लड़ाई में बलिदान दिया था। अब नेता और अधिकारी जिनका मूल कर्तव्य जनता की सेवा करना था वे कर्तव्य से विमुख होकर शोषक बन गए। इस संबंध में 'प्रश्न और मरीचिका' उपन्यास में वर्मा जी का कहना है कि ''आज हिन्दुस्तान वह नहीं है जो आजादी के पहले था। हरेक आदमी धीरे-धीरे चरित्रहीन और बेईमान बनता जा रहा है या यों कहें कि परिस्थितियों द्वारा बनाया जा रहा है। सारी सत्ता नौकरशाही के हाथ में है और बेईमानी इस नौकरशाही की नस-नस में भरी हुई है।''[x]

वर्मा जी के उपन्यासों में एक बात स्पष्ट हो जाती है कि आज का युग पूँजीवादी युग है जिसमें धन की महत्ता सर्वोपरि है। धन के अभाव में सबसे ज्यादा गरीब इंसान पिसता है जिसका प्रमाण वर्मा जी ने अपने 'आखिरी दाँव' उपन्यास में दिया है ''आज की दुनिया और खासतौर से बम्बई की दुनिया बड़ी अजीब है। इस दुनिया का देवता है रुपया।''[xi] आज धन के पीछे मनुष्य दौड़ रहा है जिसकी वजह से मनुष्य आर्थिक परिस्थितियों का दास बन गया है।

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग की समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने कहा है कि मध्यवर्ग की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक विडम्बना है जिसके कारण मध्यवर्ग में अनेक समस्याएँ देखने को मिलती है। जैसे- दहेज, अनमेल विवाह, देह व्यापार की समस्या, इन सभी समस्याओं की वजह से मध्यवर्गीय समाज हमेशा कुंठित रहता है। इस आर्थिक समस्या की वजह से मध्य वर्ग में प्रत्येक व्यक्ति अपनी बेटी का विवाह अच्छी जगह करना चाहता है परंतु वह पैसे के अभाव के कारण अपनी बेटी का विवाह उम्र में बड़े व्यक्ति के साथ करने के लिए मजबूर हो जाता है।

'थके पाँव' उपन्यास में मध्यवर्ग की विशिष्ट स्थिति के बारे में वर्मा जी का कहना है कि ''जिसे लोग मध्यवर्ग कहते हैं उसमें जीवित रहने का संघर्ष भयानक है। इस वर्ग के पास विशिष्टता का ढोंग है। सम्पन्नता का दिखावा है। इसके पास सामाजिकता है, इसके पास नैतिकता है। अभावों और विवशताओं से इस मध्यवर्ग का निस्सार नहीं क्योंकि उनकी वे मान्यताएँ ही इस वर्ग के सत्य हैं जिनमें अभावों और विवशताओं का जन्म होता है।''[xii]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में इतिहास और कल्पना के मिश्रित रूप का चित्रण किया है। 'चित्रलेखा' उपन्यास में बीजगुप्त ने जीवन में सहयोग कर लिया है साथ ही अपनी भावना का उदात्तीकरण भी कर लिया है। कर्म का भोग, भोग का कर्म- यही जड़ और चेतना का आनन्द बीजगुप्त का जीवन-दर्शन है साथ ही वर्मा जी की भोगवादी दार्शनिक विचारधारा भी है, जिसमें भोग के साथ-साथ त्याग को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और इस दार्शनिक पद्धति को प्रस्तुत करने के लिए अपनी सुविधा के अनुसार वर्मा जी ने प्रचुर मात्रा में काल्पनिकता का सहारा

लिया है। इनकी काल्पनिकता इनके उपन्यास में मंतव्य को प्राप्त करने हेतु साधन के रूप में आती है साथ ही इतिहास को भी अपने मंतव्य के साधन का एक अन्य आयोजन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अंततः हम कह सकते हैं कि वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में ऐतिहासिक तथ्यों को काल्पनिकता के कलेवर में ढालकर निजी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कथा संसार का सृजन किया गया है।

संदर्भ सूची-

[i] आलोचना (उपन्यास अंक) पृष्ठ 178
[ii] उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा, डॉ ब्रजनारायन सिंह पृष्ठ 19
[iii] पतन, पृष्ठ 18
[iv] उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा, डॉ ब्रजनारायन सिंह पृष्ठ 19
[v] हिंदी उपन्यास : अंतरंग पहचान, डॉ प्रेमकुमार, पृष्ठ 25
[vi] भगवतीचरण वर्मा, चित्रलेखा भूमिका
[vii] चित्रलेखा पृष्ठ 8-9
[viii] वही, पृष्ठ 88
[ix] साहित्यिक साक्षात्कार रणवीर रांग्रा पृष्ठ 84
[x] प्रश्न और मरीचिका पृष्ठ 180
[xi] आखिरी दांव, पृष्ठ 26
[xii] थके पाँव, पृष्ठ 31-32